अध्याय 6

पुनः आरम्भ करना

निर्गमन 6, मिस्त्र से इस्राएल के लोगों को छुड़ाने के लिए एक नई शुरुआत के बारे में बताता है। लोगों को वहाँ से निकल जाने की आज्ञा फ़िरौन के द्वारा दे दी जाए, इसके लिए अपने प्रथम प्रयास में मूसा और हारून ने असफलता का सामना किया: फ़िरौन ने उन्हें अपने यहोवा परमेश्वर के लिए पर्व करने के निवेदन को अस्वीकार कर दिया और इस्राएल के लोगों (अध्याय 5) का जीवन और भी कठिन कर दिया। जब उन्होंने मूसा से शिकायत की तो मूसा उनकी शिकायत को यहोवा परमेश्वर के पास लेकर गया।

इसके प्रत्युत्तर में, परमेश्वर ने मूसा को इस मिशन में अन्ततः सफ़लता प्रदान करने का आश्वासन दिया (6:1)। तब परमेश्वर ने अपने नाम "यहोवा," पर बल दिया और मूसा से कहा कि वह लोगों को उस वाचा का स्मरण दिलाए जो उसने अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ बाँधी थी। इस वाचा के कारण ही उसने इब्री गुलामों की चिल्लाहट को सुना था। वह उन्हें छुड़ाएगा, उन्हें अपने लोग बनाएगा और कनान देश में ले जाएगा (6:2-8)। फ़िर भी, इस्राएल के लोग इतने निराश थे कि उन्होंने मूसा के शब्दों में कोई आराम महसूस नहीं किया (6:9)। परमेश्वर ने फ़िर से अनिच्छुक मूसा को आदेश दिया कि वह फ़िरौन के सम्मुख जाए और इस्राएल के लोगों को छोड़ देने की माँग करे (6:10-13)।

इस बिन्दु पर, यह घटना एक ठहराव लेती है जिससे कि लेवियों की, जो कि मूसा और हारून का परिवार था, वंशावली का वर्णन दे (6:14-27)। तब पाठ्य कहता है कि परमेश्वर ने लोगों को छुड़ाने के लिए मूसा को बुलाया। फ़िर भी, मूसा ने इस प्रकार विरोध करने के द्वारा कि वह बोलने में भद्दा है (6:28-30), इस मिशन से पद त्याग करने का फ़िर से प्रयास किया। इस विरोध के प्रति परमेश्वर का प्रत्युत्तर अध्याय 7 में देखने को मिलता है।

परमेश्वर का प्रत्युत्तर: उसका नाम प्रकट किया गया और उसका वायदा दोहराया गया (6:1-8)

1तब यहोवा ने मूसा से कहा, "अब तू देखेगा कि मैं फ़िरौन से क्या करूँगा, जिससे वह उनको बरबस निकालेगा; वह तो उन्हें अपने देश से बरबस निकाल देगा।" 2परमेश्वर ने मूसा से कहा, "मैं यहोवा हूँ। 3मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम

से अब्राहम, इसहाक, और याक़ूब को दर्शन देता था, परन्तु यहोवा के नाम से मैं उन पर प्रगट न हुआ। 4और मैं ने उनके साथ अपनी वाचा दृढ़ की है, अर्थात् कनान देश जिसमें वे परदेशी होकर रहते थे, उसे उन्हें दे दूँ। 5इस्राएली जिन्हें मिस्री लोग दासत्व में रखते हैं, उनका कराहना भी सुनकर मैं ने अपनी वाचा को स्मरण किया है। 6इस कारण तू इस्राएलियों से कह, 'मैं यहोवा हूँ, और तुम को मिस्रियों के बोझों के नीचे से निकालूँगा, और उनके दासत्व से तुम को छुड़ाऊँगा, और अपनी भुजा बढ़ाकर और भारी दण्ड देकर तुम्हें छुड़ा लूँगा, 7और मैं तुम को अपनी प्रजा बनाने के लिये अपना लूँगा, और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूँगा; और तुम जान लोगे कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ जो तुम्हें मिस्रियों के बोझों के नीचे से निकाल ले आया, 8और जिस देश के देने की शपथ मैं ने अब्राहम, इसहाक, और याक़ूब से खाई थी उसी में मैं तुम्हें पहुँचाकर उसे तुम्हारा भाग कर दूँगा। मैं तो यहोवा हूँ'।"

आयत 1. परमेश्वर, मूसा के प्रश्नों के उत्तर दे रहा था जिन्हें 5:22 में देखा जा सकता है: "तू ने इस प्रजा के साथ ऐसी बुराई क्यों की?"; "तू ने मुझे यहाँ क्यों भेजा?" परमेश्वर का, तुरन्त प्रभाव से, प्रत्युत्तर यह था, "रुको! यह कहानी यहीं पर समाप्त नहीं हो गई है; अन्त में मैं इस्राएल को छुड़ा लूँगा, और तुम स्वयं देखोगे कि मैं फ़िरौन के साथ क्या करता हूँ।" परमेश्वर के उत्तर ने यह सुझाया कि मूसा के प्रथम प्रयास को काटने के लिए परमेश्वर ने फ़िरौन को स्वीकृति दी कि जब परमेश्वर सफ़ल हो तब यह स्पष्ट हो जाए कि **फ़िरौन उनको** [लोगों को] **बरबस निकालेगा**। जिन लोगों ने पीछे मुड़कर इस घटना की ओर दृष्टि की वे यह नहीं कहेंगे, "क्या फ़िरौन एक दयालु राजा नहीं था? उसे दुख हुआ और उसने हमें मिस्र से निकल जाने दिया।" फ़िरौन ने मूसा के निवेदनों का जितना अधिक विरोध किया उतना अधिक परमेश्वर को महिमा मिली जब अन्त में इस्राएल फ़िरौन के नियन्त्रण से छूट गया।

आयत 1 में जिस प्रकार इब्रानी शब्द लिए गए हैं वे अक्षरशः NRSV में प्रतिबिम्बित होते हैं: "अपने सामर्थी हाथ के द्वारा वह उन्हें बरबस निकालेगा; अपने सामर्थी हाथ के द्वारा वह तो उन्हें अपने देश से बरबस निकाल देगा।" परमेश्वर, "एक सामर्थी हाथ" का प्रयोग करते हुए फ़िरौन पर दबाव डालेगा कि वह इस्राएल को जाने दे। फ़िरौन, इसके बदले में, "एक सामर्थी हाथ" के साथ इस्राएल के लोगों को मिस्र से बरबस निकाल देगा।

आयतें 2, 3. परमेश्वर (אֱלֹהִים, *'एलोहिम)* ने फ़िर से स्वयं की पहचान **यहोवा परमेश्वर** अथवा "यहोवा" (3:14, 15 पर टिप्पणी देखें) के रुप में दी। उसने कहा कि उनके कुलपति उसे **सर्वशक्तिमान ईश्वर** (אֵל שַׁדָּי, *'एल शद्दाय*; देखें उत्पत्ति 17:1; 28:3; 35:11; 48:3) के रुप में जानते थे परन्तु वह अपने, **यहोवा**, **नाम** से उन पर प्रगट न हुआ। धर्मशास्त्र की व्याख्या करने वाले व्यक्ति के लिए समस्या यह है कि यहोवा परमेश्वर अथवा "यहोवा" (יהוה, *यहवह*) शब्द उत्पत्ति में लगातार देखने को मिलता है। प्रायः कुलपतियों ने परमेश्वर के लिए इस नाम का प्रयोग किया। फ़िर, तब परमेश्वर यह कैसे कह सकता है कि **अब्राहम, इसहाक और**

याकूब उसे यहोवा परमेश्वर अथवा "यहोवा" के रुप में नहीं जानते थे?

इसके लिए एक विचार, गलत दस्तावेज परिकल्पना, पर आधारित है जो यह अनुमान लगाता है कि चार प्राचीन स्त्रोत एक साथ मिला दिए गए जिससे कि पंचग्रन्थ तैयार किया जा सके। (अधिक जानकारी के लिये देखें *अतिरिक्त अध्ययन: निर्गमन का लेखक।*) इनमें से बताए गए स्त्रोतों में से एक के अनुसार ("ई" दस्तावेज), अब्राहम के वंशजों ने परमेश्वर के लिए "यहोवा" शब्द का प्रयोग तब तक नहीं किया जब तक कि मूसा का समय नहीं आया।[1] इसके अतिरिक्त, इस विचार के अनुसार, "यहोवा," "उस परमेश्वर का नाम था जो कि उस गोत्र का परमेश्वर था जिसके साथ मूसा, मिस्त्र में से भागने के समय साथ जुड़ गया।"[2] अतः मूसा के समय में "यहोवा" नाम, जो कि कनानियों के ईश्वर का नाम था, परमेश्वर के साथ जोड़ दिया गया जिसकी आराधना कुलपति करते थे।

इस पाठ्य का बहुत ही उपयुक्त विवरण यह होगा कि "यहोवा" नाम का पूरा महत्व कुलपतियों पर प्रकट नहीं किया गया था। प्राचीन समय में, किसी व्यक्ति का परिचय देने के तरीके से बढ़कर नाम हुआ करता था। किसी व्यक्ति के चरित्र, काम अथवा कार्य के बारे में कुछ संकेत देते हुए उसके नाम के साथ महत्वपूर्ण अर्थ जुड़े होते थे। अतः, "यहोवा" नाम सम्भावित रुप से आरम्भ से परमेश्वर के नाम के रुप में जाना जाता था, परन्तु इस नाम का वाचा से सम्बन्धित महत्त्व तब तक स्पष्ट नहीं हुआ जब तक यहोवा ने अपने लोगों को छुड़ा नहीं लिया और उनके साथ वाचा का सम्बन्ध स्थापित नहीं कर लिया।

यह नाम नया नहीं था परन्तु निर्गमन के समय में नए अर्थ के साथ मन में बैठा दिया गया क्योंकि अपने इस्राएली लोगों के साथ एक नए सम्बन्ध में यहोवा प्रवेश कर रहा था। रोनाल्ड एफ़. यंगब्लड ने यह नोट किया, "जब तक मूसा का समय नहीं आ गया तब तक कुलपतियों के वंशज उस नाम को उसके भरपूर अर्थ और अनुप्रयोग में जान नहीं पाए।"[3] "यहोवा" शब्द, परमेश्वर के लिए अद्वितीय व्यक्तिगत नाम ही नहीं था परन्तु "सम्बन्धात्मक" नाम भी था। यह ऐसा नाम था जिसका प्रयोग परमेश्वर ने मानव जाति के साथ सम्बन्ध स्थापित करने के लिए किया।

निर्गमन के अनुसार, "यहोवा" नाम से परमेश्वर को "जानने" का अर्थ मात्र यह नहीं है कि इस्राएल के परमेश्वर को "यहोवा" नामक एक ईश्वर के रुप में पहचान लेना। आखिरकार, मिस्त्र के लोग और इस्राएल के लोग पूर्व में ही इस्राएल के परमेश्वर के नाम को जानते थे। महामारियों का एक उद्देश्य यह था कि मिस्त्र के लोगों के लिए यह सम्भव किया जा सके कि वे यहोवा परमेश्वर को "जान" सकें। उदाहरण के लिए, 7:17 में मूसा ने कहा, "यहोवा यों कहता है, इससे तू जान लेगा कि मैं ही परमेश्वर हूँ; देख, मैं ... नील नदी के जल पर मारूँगा, और जल लहू बन जाएगा।" 10:2 में, परमेश्वर ने कहा कि उसने इस्राएल के लोगों के बीच में अपने चिन्ह प्रकट किए "जिससे कि तुम जान लो कि मैं ही परमेश्वर हूँ।" किसी भी विषय में परमेश्वर ने ऐसा नहीं कहा, "मैंने ये चिन्ह इसलिए प्रकट किए कि तुम विश्वास करो कि मैं परमेश्वर हूँ।" अतः उसके कहने का अर्थ यह नहीं था कि उन्हें यह जानने

की आवश्यकता थी कि यहोवा अस्तित्व में हैं, उसमें वे विश्वास करें अथवा वे उसकी पहचान सही नाम से कर सकें। इसके स्थान पर उसके कहने का अर्थ यह था कि वे लोग उसके साथ सम्बन्ध रखने के आरम्भ के रुप में अथवा उन सम्बन्धों को निरन्तर बनाए रखने के भाग में - जाने कि वह कौन है, वह किसके समान है और वह क्या कर सकता है।

आयतें 4, 5. परमेश्वर ने कहा कि इस्राएल के लोगों को छुड़ाने के पीछे उसके पास दो कारण थे। पहला, उसने अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ एक **वाचा** बाँधी थी। परमेश्वर ने अब्राहम से मात्र यही वायदा नहीं किया था कि उसके वंशज असंख्य होंगे परन्तु उसने यह भी कहा कि उन्हें गुलामी से छुड़ाया जाएगा और वे लोग कनान देश के भागी होंगे (उत्पत्ति 12:7; 15:12-16, 18; 17:8)। यह वायदा इसहाक और याकूब के साथ दोहराया गया (उत्पत्ति 24:7; 28:4, 13; 48:4; 50:24)।

दूसरा, परमेश्वर ने (उनके) **कराहने** (देखें 2:23-25) **को सुना** और अपनी (उस) **वाचा** को **स्मरण किया**। जब यह कहा जाता है कि परमेश्वर ने "स्मरण" किया इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर भूल भी सकता है। इसके स्थान पर, इसका अर्थ यह है कि पूर्व में अपने द्वारा प्रकाशित उद्देश्यों के अनुसार जिन लोगों को उसने स्मरण किया था उन्हें आशीषित करने के लिए परमेश्वर ने दृढ़ निश्चय किया।

आयत 6. परमेश्वर ने तब मूसा से कहा कि वह लोगों के बीच अपने मन की बात की घोषणा करे, जिसमें उस सन्देश को यह कहते हुए आरम्भ करे "**मैं यहोवा हूँ**," जो कि एक ऐसा प्रकटीकरण है जिसका लगातार प्रयोग निर्गमन में और पूरे पंचग्रन्थ में किया गया। वह प्रत्येक सन्दर्भ जहाँ पर यह प्रकटीकरण देखने को मिलता है, वहाँ यह एक आज्ञा, एक वायदा अथवा एक चेतावनी के लिए आधार उपलब्ध करवाता है। चूँकि परमेश्वर, यहोवा परमेश्वर है - क्योंकि परमेश्वर, यहोवा है, जो कि उस नाम के साथ जुड़े हुए सब अर्थों के साथ है - कुछ ऐसा था जो कि इस्राएल को करना था, कुछ ऐसे वायदे थे जिन पर वे भरोसा कर सकते थे अथवा कुछ चेतावनियाँ थी जिनसे उन्हें डरना चाहिए था। "यहोवा" नाम, परमेश्वर के चरित्र को शामिल करता है। चूँकि यहोवा वही है जो वह है, कुछ निश्चित तरीके हैं जिनके द्वारा लोगों को कार्यों को करना चाहिए, यह ऐसा कारण था जिसके द्वारा उनको आराम अथवा चेतावनी मिलनी चाहिए। "यहोवा" नाम यहोवा परमेश्वर के चरित्र अथवा व्यक्तित्व के साथ समानता रखता है; यहोवा परमेश्वर को "यहोवा" के रुप में जानने का अर्थ है यह जानना कि यहोवा परमेश्वर कैसा दिखाई देता है। वे लोग उसे जान सकें इसके लिए परमेश्वर ने उन्हें मिस्रियों से **छुड़ाने**, उनके **बोझों** के नीचे से **निकाल** लाने, उनके दासत्व से उनको **छुड़ाने** और **भारी दण्ड** देकर उन्हें छुड़ा लेने, का मन रखा।

आयत 7. परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वह उसके नाम की घोषणा लोगों के बीच में कर दे जिससे कि वे निश्चित रुप से यह जान लें कि उनके छुटकारे के लिए कौन ज़िम्मेदार है। वह उन्हें अपनी **प्रजा** बनाने के लिए अपना लेगा और (उनका)

परमेश्वर ठहरेगा। उसने कहा, **"और तुम** [तब] **जान लोगे कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ जो तुम्हें मिस्रियों के बोझों के नीचे से निकाल ले आया।"** आराम देने वाले इन शब्दों ने उस वाचा की पूर्वछाया प्रदान की जो परमेश्वर इस्राएल के साथ सीनै पर्वत (देखें 19:3-6) पर बाँधने जा रहा था। फ़िर भी, उनके इतिहास में इस बिन्दु पर यहोवा परमेश्वर के बारे में जानने के लिए उनके पास बहुत कुछ था। परमेश्वर की घोषणा सम्भावित रुप से उन्हें उस आश्वासन तक नहीं ला पाई जो कि उनके पास होना चाहिए था।

आयत 8. जिस **देश** के देने की शपथ परमेश्वर ने **अब्राहम, इसहाक, और याक़ूब** (6:4, 5 पर टिप्पणी देखें) से खाई थी उस देश में पहुँचने के लिए परमेश्वर उनकी अगुवाई करेगा। आयतें 6 से 8, इस बिन्दु से कनान में प्रवेश करने के द्वारा इस्राएल के लोगों के अनुभवों के बारे में एक रुप-रेखा उपलब्ध करवाती हैं: (1) परमेश्वर, इस्राएल को मिस्र से छुड़ाता है (निर्गमन 1-18); (2) परमेश्वर, इस्राएल को अपनी प्रजा बना लेता है (निर्गमन 19-लैव्य.); (3) परमेश्वर, इस्राएल को एक देश देता है (गिनती-यहोशू)।

लोगों ने सुनने से इनकार किया (6:9)

[9]ये बातें मूसा ने इस्राएलियों को सुनाईं, परन्तु उन्होंने मन की बेचैनी और दासत्व की क्रूरता के कारण उसकी न सुनी।

आयत 9. मूसा ने परमेश्वर का सन्देश लोगों तक पहुँचा दिया। फ़िर भी परमेश्वर के नए वायदे से रोमांचित होने और उसने जो आश्वासन दिया उसे गले लगाने के स्थान पर लोग अपनी **निराशा** में ही बने रहे। फ़िरौन की **क्रूर गुलामी** के कारण वे अन्दर तक टूट चुके थे। उनका काम बढ़ाने के द्वारा फ़िरौन का जो लक्ष्य था, उसे प्राप्त कर लिया (5:9)। इस्राएल के परमेश्वर के साथ मुकाबले में फ़िरौन विजयी होता नज़र आया।

परमेश्वर की मूसा के लिए एक नई बुलाहट (6:10-13)

[10]तब यहोवा ने मूसा से कहा, [11]"तू जाकर मिस्र के राजा फ़िरौन से कह कि इस्राएलियों को अपने देश में से निकल जाने दे।" [12]परन्तु मूसा ने यहोवा से कहा, "देख, इस्राएलियों ने मेरी नहीं सुनी; फिर फ़िरौन मुझ भद्दे बोलनेवाले की कैसे सुनेगा?" [13]तब यहोवा ने मूसा और हारून को इस्राएलियों और मिस्र के राजा फ़िरौन के लिये इस अभिप्राय से आज्ञा दी कि वे इस्राएलियों को मिस्र देश से निकाल ले जाएँ।

आयतें 10-13. परमेश्वर ने अपने दास **मूसा** को निर्देश दिया कि वह राजा के सम्मुख फ़िर से जाए जिससे कि उसके लोग उस स्थान से निकल सकें (देखें 5:1)। देखा जाए तो इस्राएल के लोग ही निराशा में नहीं थे; परन्तु मूसा भी उनके साथ

निराशा में था। ऐसा लग रहा था मानो वह जलती हुई झाड़ी के पास यहोवा परमेश्वर के साथ हुई अपनी बातचीत को भूल चुका था। वह फ़िर से अपने पुराने बहानों पर आ गया (4:10), परन्तु इस बार अपने दावों के समर्थन में उसने साक्ष्य भी प्रस्तुत किए: “देख, इस्राएलियों ने मेरी नहीं सुनी। फ़िर क्या तू यह अपेक्षा करता है कि फ़िरौन मेरी सुनेगा? मैंने तुझसे कहा कि मैं तो भद्दा बोलने वाला मनुष्य हूँ!” परमेश्वर ने मूसा और हारून को अपना आदेश दुहराते हुए प्रत्युत्तर दिया और उनसे फ़िर से कहा कि उसने उन्हें इसलिए बुलाया कि **वे इस्राएलियों को मिस्र देश से निकाल ले जाएँ।**

मूसा और हारून की वंशावली (6:14-27)

**14उनके पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष ये हैं: इस्राएल का जेठा, रूबेन के पुत्र:
हनोक, पल्लू, हेस्रोन और कर्म्मी; इन्हीं से रूबेन के कुल निकले। 15शिमोन के पुत्र:
यमूएल, यामीन, ओहद, याकिन और सोहर, और एक कनानी स्त्री का बेटा शाऊल;
इन्हीं से शिमोन के कुल निकले। 16लेवी के पुत्र जिनसे उनकी वंशावली चली है,
उनके नाम ये हैं: अर्थात् गेर्शोन, कहात और मरारी; और लेवी की पूरी अवस्था
एक सौ सैंतीस वर्ष की हुई। 17गेर्शोन के पुत्र जिनसे उनका कुल चला: लिबनी और
शिमी। 18कहात के पुत्र: अम्राम, यिसहार, हेब्रोन और उज्जीएल; और कहात की
पूरी अवस्था एक सौ तैंतीस वर्ष की हुई। 19मरारी के पुत्र: महली और मूशी। लेवियों
के कुल जिनसे उनकी वंशावली चली ये ही हैं। 20अम्राम ने अपनी फूफी योकेबेद से
विवाह किया और उससे हारून और मूसा उत्पन्न हुए; और अम्राम की पूरी अवस्था
एक सौ सैंतीस वर्ष की हुई। 21यिसहार के पुत्र: कोरह, नेपेग और जिक्री। 22उज्जीएल
के पुत्र: मीशाएल, एलसापन और सित्री। 23हारून ने अम्मीनादाब की बेटी, और
नहशोन की बहिन एलीशेबा से विवाह किया; और उससे नादाब, अबीहू, एलाजार
और ईतामार उत्पन्न हुए। 24कोरह के पुत्र: अस्सीर, एलकाना और अबीआसाप;
और इन्हीं से कोरहियों के कुल निकले। 25हारून के पुत्र एलाजार ने पूतीएल की
एक बेटी से विवाह किया; और उससे पीनहास उत्पन्न हुआ। इन्हीं से उनका कुल
चला। लेवियों के पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष ये ही हैं। 26हारून और मूसा ये
ही हैं जिनको यहोवा ने यह आज्ञा दी: “इस्राएलियों को दल दल करके उनके जत्थों
के अनुसार मिस्र देश से निकाल ले आओ।” 27ये वही मूसा और हारून हैं जिन्होंने
मिस्र के राजा फ़िरौन से कहा कि हम इस्राएलियों को मिस्र से निकाल ले जाएँगे।**

उत्पत्ति में वंशावलियाँ, एक भाग में, इसलिए दी गई कि मानवजाति से अब्राहम तक के वंश को संकरा किया जा सके और उसके बाद अब्राहम से याकूब तक के वंश को संकरा किया जा सके जिससे कि उस बीज पर ध्यान केन्द्रित किया जा सके जिसके द्वारा परमेश्वर संसार को आशीषित करने पर था। निर्गमन में (इस प्रकार की) एक वंशावली पूर्व में ही प्रस्तुत कर दी गई है: “ये नाम इस प्रकार हैं ...” (1:1-5)। वह पद उन लोगों की ओर ध्यान केन्द्रित करता है जो इस्राएल के

गोत्रों के ऊपर मुख्य पुरुष बने। यह इस प्रश्न का उत्तर देता है “वे लोग कौन थे जो छुड़ाए गए?” उत्तर इस प्रकार है “वे लोग जो याकूब की वंशावली से हैं।” अध्याय 6 में दी गई वंशावली उत्पत्ति में दी गई सूची के समान कार्य करती है। अध्याय 1 में उन वंशजों के लोगों के नाम दिए गए, जिन्होंने इस्राएल को छुड़ाया? अध्याय 6 उस प्रश्न का उत्तर देता है: इस्राएल के छुड़ाने वाले मूसा और हारून थे, अर्थात दो पुरुष जो लेवी के वंशज थे।

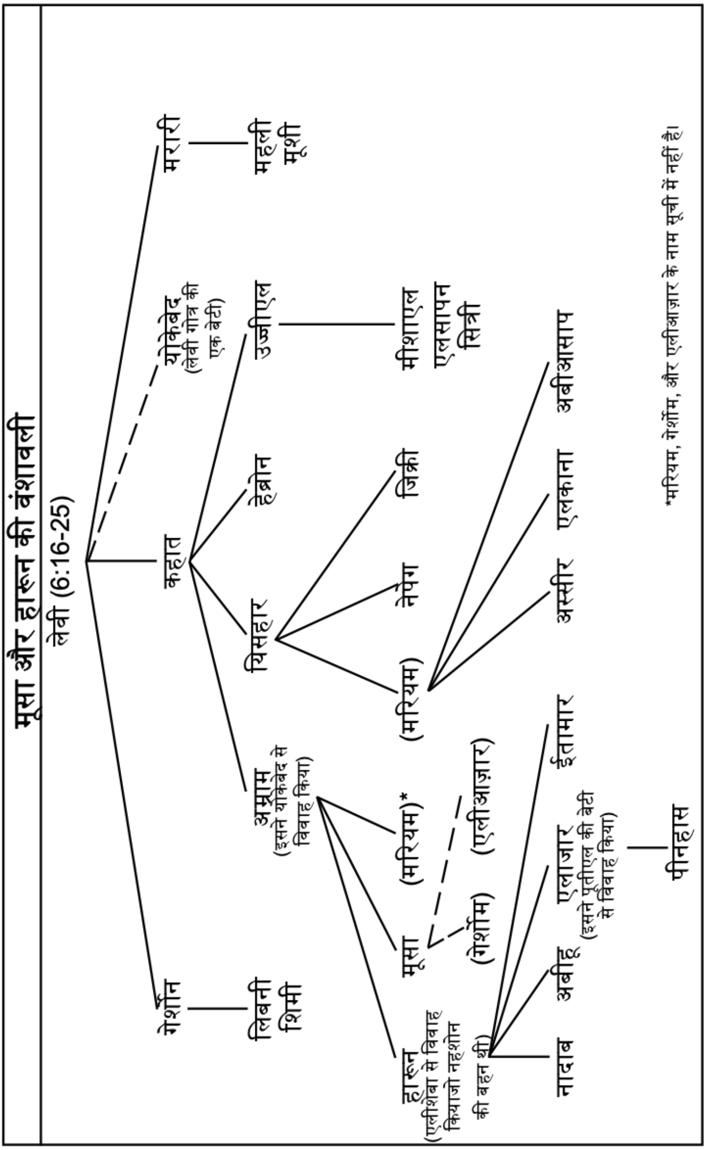

वंशावली को देखने पर एक प्रश्न जो उत्पन्न होता है वह यह है: मिस्र से इस्राएल के छुड़ाए जाने के बारे में वर्णन करने के समय बीच में ही निर्गमन के लेखक ने वंशावली को शामिल करने के लिए कहानी के बहाव में रुकावट उत्पन्न क्यों की? वंशावली को, यहाँ दी गई कहानी के दो चरणों के बीच रखा गया। लोगों को जाने देने की स्वीकृति प्राप्त करने के लिए मूसा का फ़िरौन के पास प्रथम प्रयास 4:27-6:12 में दिया हुआ है। इसका अन्त असफलता रही जिसमें फ़िरौन विजयी हुआ, परन्तु फ़िर भी परमेश्वर ने इस्राएल को छुड़ाने के लिए मूसा और हारून से बलपूर्वक आग्रह किया (6:10-13)। दूसरे चरण में, मूसा आगे बढ़ा, और जो कुछ पहले हुआ था उसका एक पुनरावलोकन लेखक ने शामिल किया। इस बार, मूसा के प्रयास सफ़ल रहे (6:28-12:51)।[4]

अध्याय 6 में दी गई वंशावली इस्राएलियों पर ध्यान केन्द्रित करती है जो याजकीय श्रेणी के लोग बनने वाले थे। जैसा कि लेवी, याजकीय गोत्र से था, इस कारण वंशावली उसके बारे में विशेष रूप से बताती है। हारून प्रथम महायाजक था इस कारण वंशावली, मूसा के स्थान पर, उसके बारे में और उसके परिवार के बारे में विशेष रूप से बताती है। हारून के बाद, एलीआज़ार पर प्रभाव दिया गया है जो हारून के बाद महायाजक बना। अन्ततः पीनहास को अगली पीढ़ी में सूचीबद्ध किया गया और ऐसा नि:सन्देह इसलिए है कि बाद में यहोवा परमेश्वर ने उसे और उसके वंशजों को "चिरस्थायी याजकीय सेवा की एक वाचा" प्रदान की (गिनती 25:13)।

इस प्रकार कहना कि, यह पद हारून और उसके वंशजों की याजकीय भूमिका पर बल देता है, का अर्थ यह नहीं है, जैसा कि कुछ टीकाकार दावा करते हैं, कि बाद में इस्राएल के इतिहास में इसे "पी" दस्तावेज के लेखक/लेखकों के द्वारा लिखा गया क्योंकि इस बात में सन्देह था कि याजक के रूप में कौन सा परिवार सेवा करेगा। यहाँ तक कि जब यह पुस्तक जंगल में लिखी गई यह आवश्यक था कि लोग हारून के याजकीय पद के महत्व को समझें (देखें गिनती 16; 17)।

आयतें 14-16. स्पष्ट रूप से यह वंशावली, याकूब के पुत्रों की विस्तृत सूची नहीं है। लेखक ने याकूब के जेठे पुत्र, **रूबेन के पुत्रों** के नाम दिए और उसके बाद **शिमोन के पुत्रों** के नाम दिए, जो कि उससे छोटा पुत्र है। इसके बाद उसने याकूब के तीसरे पुत्र **लेवी के पुत्रों के नाम** दिए। (इन सूचियों में दिए गए नाम उत्पत्ति 46:9-11 में दिए गए रिकॉर्ड के साथ समानता रखते हैं।) तब लेवी के परिवार की वंशावली देते हुए लेखक क्रम बनाए रखता है। उसने याकूब के अन्य पुत्रों के बारे में कोई सूचना उपलब्ध नहीं की। इस कारण निर्गमन की वंशावली का चयन किया गया जो लेवी के परिवार पर और विशेष रूप से मूसा और हारून के परिवार पर ध्यान केन्द्रित करती है। पाठकों को यह स्मरण दिलाना आवश्यक है कि ये लोग, जो परमेश्वर के विशेष लोग थे, याकूब के पुत्र लेवी के वंशज थे। इस समय की तुलना में, उस समय में यह देखा जाता था कि कोई भी व्यक्ति विशेष किस परिवार से आता है।

आयतें 17-19. आयत 16 **में परिचय दिए गए लेवी के तीन पुत्रों को उनके**

वंशजों के साथ चित्रित किया गया है। इन लोगों के नाम **गर्शोन**, **कोहात** और **मरारी** हैं। हालांकि इन लोगों के वंशज **लेवी** माने जाते थे परन्तु जो लोग कोहात (अम्राम और हारून के द्वारा) आते थे वे ही तम्बू में याजक के रूप में सेवकाई कर सकते थे। इस कारण, वंशावली कोहात के वंशजों पर ध्यान केन्द्रित करती है और वे ये हैं: **अम्राम, यिसहार, हेब्रोन और उज्जीएल**।

आयत 20. हालांकि लेवी (2:1) के वंशजों के रूप में पूर्व में परिचय दिया गया परन्तु मूसा के माता-पिता का परिचय यहाँ पर पहली बार दिया गया है: उसका पिता **अम्राम** था और उसकी माता **योकेबेद** थी। अम्राम ने अपने **पिता की बहन से विवाह किया** जो कि उसकी फ़ूफ़ी थी। बाद में, व्यवस्था में (लैव्य. 18:12) एक व्यक्ति का उसकी फ़ूफ़ी के साथ विवाह किए जाने पर रोक लगा दी गई। योकेबेद ने दो पुत्रों, **हारून और मूसा** को जन्म दिया। उनकी बहन मरियम (15:20), का वर्णन वंशावली में नहीं दिया गया।

वंशावली को देखने पर एक प्रश्न उत्पन्न होता है जो कि इसमें पाए जाने वाली संख्या से सम्बन्ध रखता है। नोट करने योग्य एक बात यह है कि मात्र दो पीढ़ियाँ लेवी और मूसा को अलग कर रही हैं। कोहात का पिता लेवी था; अम्राम का पिता कोहात था; हारून और मूसा का पिता अम्राम था। अतः मूसा का परदादा लेवी था - जिसमें यह अनुमान लगाया गया कि "पुत्र" शब्द की व्याख्या इस सन्दर्भ में सदैव अक्षरशः की जाए। ऊपरी भाग पर यह समझना कठिन है कि 430 वर्ष (12:40) किस प्रकार मात्र चार पीढ़ियों (देखें उत्पत्ति 15:16) में से निकल कर आ गई और किस प्रकार लगभग सत्तर लोगों से, जो याकूब के साथ मिस्र में आए थे, दो लाख लोग हो गए जो मूसा के साथ बाहर आए।

आगे वचन इस प्रकार कहता है कि लेवीय लोगों ने 137 वर्ष (6:16) तक जीवन जीया, कोहात 133 वर्ष (6:18) तक जीवित रहा, और अम्राम 137 वर्ष (6:20) तक जीवित रहा। कुल 407 वर्षों में ये तीन व्यक्ति जीवित रहे, जो उतना ही समय है जितना समय इस्राएल ने मिस्र में बिताया। फ़िर भी, जब इस्राएल, मिस्र में पहुँचा तब सबसे बड़ा लेवी, और कोहात भी कनान से मिस्र पहुँचे (उत्पत्ति 46:6, 7, 11)। हो सकता है कि पुत्रों और उनके पिता के जीवित रहने के वर्षों का समय एक ही रहा हो परन्तु अगर वर्षों को अक्षरशः लिया जाए तो इससे मिस्र की यात्रा की लम्बाई का निश्चय करने के लिए इन्हें एक-साथ जोड़ा नहीं जा सकता। चार पीढ़ियों को एक सौ वर्ष और उससे अधिक दो सौ वर्षों के साथ जोड़ा जा सकता है परन्तु चार सौ वर्ष के लिए इन्हें जोड़ा नहीं जा सकता।

अम्बरटो कस्सूटो ने कहा कि वंशावली में दी गई संख्याओं को, यहाँ पर अथवा उत्पत्ति में अक्षरशः नहीं लिया जाए। आलंकारिक अर्थ जोड़ते हुए उसने इन संख्याओं के लिए यह प्रस्ताव रखा जिसमें वह उस स्थान पर पहुँचा जहाँ इस प्रकार लिखा है "430 वर्षों का समय, जिसका रिकॉर्ड [12:40] में देखने को मिलता है।"[6] फ़िर भी, अनेक रुढ़ीवादी टीकाकारों के द्वारा अनुमान लगाने के द्वारा समस्या का निवारण किया गया कि अनेक पीढ़ियाँ इस वंशावली से निकाल दी गई, जबकि वे अन्य बाइबल विषयक वंशावलियों में से होकर आगे बढ़ी।[7] 1 इतिहास में पायी

जाने वाली वंशावली के आधार पर, ग्लीसन एल. आर्चर, जूनियर ने यह बताया कि "याकूब के पुत्रों और मूसा की पीढ़ी के बीच में नौ अथवा दस पीढ़ियाँ रहीं।"[8] उदाहरण के लिए, 1 इतिहास 7:22-27 याकूब के पोते एप्रैम से लेकर मूसा के सेवक यहोशू तक दस पीढ़ियों की सूची देखने को मिलती है।[9]

आयतें 21, 22. अम्राम के साथ ही, कोहात के दो अन्य पुत्र, **यिसहार** और **उज्जीएल**, उनके पूर्वजों के द्वारा विशेष रूप से चिन्हित किए गए। यिसहार के **पुत्रों** में से एक **कोरह** था जिसका वर्णन फ़िर से आयत 24 में किया गया। कोहात के पुत्र हेब्रोन के लिए किसी भी वंशज का नाम नहीं दिया गया।

आयत 23. मूसा के बारे में बताने के स्थान पर उसके भाई **हारून**, जो अम्राम का पहलौठा पुत्र था (देखें 7:7) उस पर वंशावली बल देती है। हारून ने **एलीशेबा से विवाह** किया, जो **अम्मीनादाब की बेटी, और नहशोन की बहिन थी**। एलीशेबा का परिवार यहूदा की पीढ़ी से था। उसका भाई नहशोन, जंगल में भटकने (गिनती 1:7; 2:3; 7:12, 17; 10:14) के समय उस गोत्र का एक प्रमुख अगुवा था। अम्मीनादाब और नहशोन के नाम राजा दाऊद (रूत 4:20) और यीशु मसीह (मत्ती 1:4) की वंशावलियों में देखने को मिलते हैं।

हारून और एलीशेबा के चार पुत्र थे: **नादाब, अबीहू, एलीआज़ार, और ईतामार**। पहले दो पुत्र नादाब और अबीहू इस कारण बदनाम हुए कि उन्होंने परमेश्वर के सम्मुख "ऊपरी आग" अर्पित की जिसके कारण उनकी मृत्यु हो गई (लैव्य. 10:1, 2)। इसके विपरीत, एलीआज़ार, और ईतामार को उनकी धार्मिकता के लिए स्मरण किया जाता है। हारून की मृत्यु के बाद, एलीआज़ार ने महायाजक का स्थान लिया (गिनती 20:28; व्यव. 10:6)।

आयत 24. कोरह के वंशजों (6:21) की सूची यहाँ पर, हारून के परिवार के वंशजों का क्रमभंग करते हुए दी गई है। जंगल में मूसा और हारून के विरोध में खड़े होने वाले लोगों के अगुवों में से एक कोरह था। उसने इस विचार को चुनौती दी कि हारून और उसके पुत्र ही याजक के रूप में सेवकाई करने के योग्य नहीं हैं और यह दावा किया कि सम्पूर्ण महासभा ही परमेश्वर के लिए पवित्र है। परिणामस्वरूप परमेश्वर का न्याय कोरह पर और अन्य विद्रोहियों पर इस प्रकार आया कि कुछ लोगों को तो धरती ने निगल लिया और शेष लोगों को नष्ट करने के लिए स्वर्ग से आग गिरी जिसने उन्हें भस्म कर दिया (गिनती 16:1-40)।

आयत 25. हारून के याजकीय क्रम पर फ़िर से ध्यान केन्द्रित किया जाता है जिसका तीसरा पुत्र **एलीआज़ार**, **पीनहास** का पिता बना। पीनहास अपने बड़े जोश के लिए जाना जाता है जिसने उस महामारी को रोका जो परमेश्वर ने इस्राएल पर उनकी मूर्तिपूजा और अनैतिकता के कारण भेजी (गिनती 25)।

आयत 14 में जो वंशावली आरम्भ हुई वह यहाँ पर समाप्त होती है: **उनके पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष ये हैं।** फ़िर भी **लेवियों के लिए** जो सन्दर्भ काम में लिए गए हैं वे यह संकेत देते हैं कि रिकॉर्ड रखने का उद्देश्य याजकीय गोत्र को मुख्य रूप से दिखाने के लिए था।

आयतें 26, 27. हारून और मूसा की वंशावली की सच्चाई को इन आयतों में

चिन्हित किया गया है। लेखक दोहराने के लिए व्यत्यासिका (chiasm) का प्रयोग करता है:

A1: **ये वही हारून और मूसा थे**

B1: जिन्हें परमेश्वर ने कहा, "इस्राएल के पुत्रों को मिस्र देश से उनके जत्थों के अनुसार निकाल ले आओ।"

C: ये वही मूसा और हारून हैं जिन्होंने मिस्र के राजा फ़िरौन से कहा

B2: कि हम इस्राएलियों को मिस्र से निकाल ले जाएँगे;

A2: **ये वही मूसा और हारून थे।**

यह आकार हारून के साथ ही आरम्भ होता है और उसी से समाप्त होता है जिसे मुख्य व्यक्ति के रूप में वंशावली में बताया गया।

फ़िरौन से बात करने के लिए मूसा को परमेश्वर का आदेश (6:28-30)

[28]जब यहोवा ने मिस्र देश में मूसा से यह बात कही, [29]"मैं यहोवा हूँ; इसलिये जो कुछ मैं तुझ से कहूँगा वह सब मिस्र के राजा फ़िरौन से कहना।" [30]परन्तु मूसा ने यहोवा को उत्तर दिया, "मैं तो बोलने में भद्दा हूँ; और फ़िरौन कैसे मेरी सुनेगा?"

आयतें 28-30. वंशावली के तुरन्त बाद ये आयतें एक प्रश्न उत्पन्न करती हैं: इस अवसर पर **परमेश्वर ने मूसा से** [बात] कब की? यहाँ पर समस्या फ़िर से दोहराव की है; 6:28-30 इन विचारों को दोहराती हैं जिन्हें 6:10-12 में देखा जा सकता है, जिसमें लगभग समान शब्दों का प्रयोग किया गया। क्या 6:28-30 में लेखक समान अवसर के बारे में बात कर रहा है अथवा किसी अन्य अवसर के बारे में बात कर रहा है जैसा 6:10-12 में देखने को मिलता है? अगर वह समान अवसर के बारे में बात कर रहा था तो उसने यह क्यों माना कि लगभग समान शब्दों में उसी सूचना को दोहराने की आवश्यकता है?

सम्भवतः 6:28-30 को समझने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि छुटकारे की घटना में नए अध्याय के आरम्भ के रूप में इन शब्दों को देखा जाए। पिछले अध्याय में 4:27-6:13 शामिल थे, जिन्हें आरम्भ से लेकर अन्त तक एक उत्तेजक कहानी के रूप में पढ़ा जा सकता है। यहाँ पर दी गई कहानी मूसा के मिशन की असफलता बताती है परन्तु फ़िर भी यह अर्थ रखती है। तब, कहानी को दो भाग करने के रूप में हमारे पास 6:14-27 की वंशावली है। यह नया भाग 6:28 के साथ आरम्भ होता है और 12:51 तक चलता रहता है; इसमें लेखक बताता है कि किस प्रकार छुटकारे का प्रयास सफ़ल रहा। वॉल्टर सी. कैसर जूनियर, ने कहा, "अनेक लोग इस भाग [6:14-27] को कहानी के बीच में एक 'बाधा' के रूप में देखते हैं परन्तु स्वयं यह कहानी एक घुमाव प्रदान करने वाले बिन्दु पर है। 1:1-

6:12 में चरण को स्थापित किया गया है, और अब मुख्य कार्य आरम्भ होता है।"[10]

आयत 28 में मूसा ने संकेत दिया कि परमेश्वर ने **मिस्र** में उसे आज्ञा दी थी (यह मानते हुए कि सीनै पर भी परमेश्वर ने उससे बात की) और कहा कि **उस दिन** उसने मूसा को आदेश दिया कि वह परमेश्वर की ओर से फ़िरौन से बात करे। ऊपरी तौर पर, 6:10-13 और 6:28-30 एक ही अवसर की ओर संकेत करते हैं।[11] यहाँ दिया गया विवरण कहानी को एक सही निष्कर्ष उपलब्ध करवाता है जो आयत 13 में समाप्त होता है और आयत 28 में आरम्भ होने वाली कहानी का एक उपयुक्त आरम्भ है।

जैसा कि आयत 12 में देखा जा सकता है, पाठ्य फ़िर से यह नोट करता है कि मूसा ने दावा किया कि वह **बोलने में भद्दा** (עֲרַל שְׂפָתָיִם, *'अरल सपथयिम)* है, एक ऐसा पद जिसे अक्षरशः "खतनारहित होंठ" (KJV; NKJV) के रूप में अनुवादित किया जा सकता है। यह प्रस्तुतिकरण एक मुहावरा है जिसका स्पष्ट रूप से अर्थ "बोलने में कमज़ोर" अथवा इसके समान कुछ है। NRSV में इसे "कमज़ोर वक्ता," और NIV में इसे "लड़खड़ाने वाले होंठ" कहा गया है। "खतनारहित होंठ" सम्भावित रूप से "आवश्यक काम पूरा करने के लिए आवश्यक शब्दों को कहने के लिए पर्याप्त और योग्य होंठ न होना" की ओर संकेत करता है, जिस प्रकार "खतनारहित हृदय और कान," "ऐसे काम और हृदय जो सुनेंगे नहीं और समझेंगे नहीं," को बताते हैं।[12] इस अलंकार में यह विचार रखा गया कि "खतनारहित" होने का अर्थ यह था कि महत्वहीन अथवा अपर्याप्त अथवा अशुद्ध होना - एक विचार जो इस्राएली लोगों की समझ को प्रकट करता था जिसमें वे (अन्य सब लोगों) की तुलना में जो कि "खतनारहित" थे और आशीषित लोग नहीं थे, स्वयं को "खतना पाए हुए," विशेष रूप से परमेश्वर के द्वारा बुलाए गए और आशीषित लोगों, के रूप में देखते थे। मूसा की समस्या का निवारण परमेश्वर ने अगले अध्याय में उपलब्ध करवाया; वास्तव में यह वही निवारण है जो उसने पूर्व में (4:14-16) उपलब्ध करवाया था।

अनुप्रयोग

निराशा से व्यवहार करना (अध्याय 6)

वॉरेन डब्ल्यु. विअर्सबे ने यह पाया कि मूसा निराश हो गया परन्तु उसने वही किया जो परमेश्वर के सब अगुवों को करना चाहिए: मूसा अपनी समस्याओं को परमेश्वर के पास लेकर गया। विअर्सबे ने पूछा, "संघर्ष करने वाले अपने सेवकों को परमेश्वर किस प्रकार उत्साहित करता है?" और उस प्रश्न का उत्तर चार कथनों में दिया। (1) "परमेश्वर ने उससे बात की और उसे बड़े वायदे दिए" (6:1-8)। (2) "परमेश्वर ने ... मूसा को अपने वाचा के नाम 'यहोवा' का स्मरण दिलाया" (6:3)। (3) "परमेश्वर ने मूसा को आश्वासन दिलाया कि वह स्वयं अपने लोगों के बोझों को महसूस करता है और उनकी ओर से वह कार्य कर रहा है" (6:5; देखें 2:24)। (4) "परमेश्वर ने मूसा को आदेश दिया कि वह फ़िर से फ़िरौन से बात करे"

(6:9-13)। तब उसने घोषणा की कि जो वंशावली आगे चलती है वह किसी प्रकार घटनावश नहीं है क्योंकि हम पाठकों को स्मरण दिलाने का यह परमेश्वर का तरीका है कि परमेश्वर ने मूसा और हारून को मिस्र में उनकी सेवकाई के लिए तैयार किया।[13]

परमेश्वर के द्वारा सामर्थी बनाए गए (अध्याय 6)

अध्याय 5 में बताए गए अवरोधों के बाद मूसा को आवश्यक रूप से ताकत की आवश्यकता थी। विल्बर फ़ील्ड्स ने यह बताया कि "परमेश्वर का जन" निम्नलिखित के द्वारा सामर्थी बनाया गया: (1) परमेश्वर के नाम के द्वारा (6:2, 3, 6, 29); (2) परमेश्वर के वायदों के द्वारा (6:1, 6-8); (3) परमेश्वर की वाचा के द्वारा (6:4, 5); (4) परमेश्वर की आज्ञा के द्वारा (6:10-13, 28, 29); और (5) पिछले उदाहरणों (पारिवारिक सम्बन्धों) के द्वारा (6:14-27)।[14]

निराशाओं से परमेश्वर किस प्रकार व्यवहार करता है (6:1-13)

निर्गमन 6 का आरम्भ यह बताता है कि मूसा निराश हो गया। उसने वही किया जो परमेश्वर ने करने के लिए कहा। उसने वह सब किया जो वह अपने लोगों के लिए कर सकता था। उसने इस्राएल को मिस्र की गुलामी से छुड़ाने का प्रयास किया परन्तु उसके कोई भी प्रयास सफ़ल नहीं हुए। फ़िरौन ने उसका अपमान किया, उसको ठट्ठों में उड़ाया और उसके निवेदन को अस्वीकार कर दिया। इससे अधिक बुरा फ़िरौन ने यह किया कि उसने इस्राएली लोगों का जीवन कठिन कर दिया। परिणामस्वरूप, इस्राएली लोग - जिन्होंने एक समय में मूसा का स्वागत किया था (4:29-31) - वे उसके विरोध में हो गए (5:19-21)। इस्राएल को छुड़ाने की मूसा की उज्ज्वल आशा बुझ गई। वह सम्भावित रूप से सोच रहा होगा, "इन सब में परमेश्वर कहाँ है? क्या हमारे साथ रहने का वायदा उसने नहीं किया था कि हमारे प्रयासों को सफ़ल करे? उन वायदों का क्या हुआ?" अतः मूसा ने परमेश्वर से शिकायत की (5:22, 23)।

क्या आपने कभी ऐसा महसूस किया कि जो कुछ आप कर रहे हैं - यहाँ तक कि परमेश्वर के लिए जो आप करने का प्रयास कर रहे हैं - वह गलत होता जा रहा है? इस प्रकार की परिस्थिति में आपको क्या करना चाहिए? आपको वही करना चाहिए जो मूसा ने किया: उसने शिकायत की परन्तु अपनी समस्या को परमेश्वर के पास लेकर जाने का उसने सही चुनाव किया। तब कहानी उस ओर मुड़ जाती है जिसमें परमेश्वर ने कुछ किया। मूसा के लिए परमेश्वर ने जो किया उसके बारे में जब हम विचार करते हैं तब हम अपनी परिस्थितियों में आराम पाएँगे। मूसा के लिए परमेश्वर ने जो किया उस पर विचार करते हुए आइए देखें कि परमेश्वर किस प्रकार निराशा से व्यवहार करता है।

परमेश्वर ने मूसा को डाँटा नहीं। मूसा ने परमेश्वर से शिकायत की। फ़िर भी, परमेश्वर के दृष्टिकोण से उसकी शिकायत के लिए वह डाँट का अधिकारी नहीं है।

कभी-कभी जब हम परमेश्वर के सम्मुख जाते हैं तब हम बहुत ही डरपोक होते हैं। हमारे मन में जो भी है उसे परमेश्वर के सम्मुख हमें बोल देना चाहिए और अपने गहरे विचारों को उसके साथ बाँटना चाहिए। हमारी प्रार्थनाएँ जितनी अधिक सीधी और व्यक्तिगत और हृदय से होंगी उतनी अधिक वे अर्थपूर्ण होंगी।

परमेश्वर ने मूसा को उत्साहित किया। परमेश्वर ने सर्वप्रथम मूसा को फ़िर से आश्वासन दिया कि अन्त में वह अपने मिशन में सफ़ल होगा (6:1)। दूसरा, परमेश्वर ने उसे अपने बारे में स्वयं का आगे का प्रकाशन देते हुए उत्साहित किया (6:2-4)। उसने मूसा को स्मरण दिलाया कि वह "प्रभु" है जो कि उसके पितरों का परमेश्वर हैं। तीसरा, लोगों के लिए अपनी चिन्ता और उनके लिए अपने वायदों के दोहराव के द्वारा परमेश्वर ने मूसा को उत्साहित किया (6:5-8)।

जब हम निराश होते हैं तब हमें ये सच्चाइयाँ स्मरण रखनी चाहिए: (1) सम्भावित रूप से हो सकता है कि हम अस्थायी और सांसारिक असफलताओं का अनुभव करें परन्तु अन्त में अगर हम परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बनें रहते हैं तो स्थायी और अनन्त सफ़लता हमारी होगी। (2) परमेश्वर हमसे प्रेम करता है और हममें व्यक्तिगत रुचि रखता है। हमें उसके स्वभाव में - उसके प्रेम में, उसकी दया, उसके सामर्थ और उसकी ताकत में, साहस प्राप्त करना चाहिए। भविष्य के बारे में हमारा विश्वास, हमारी योग्यता पर आधारित नहीं है परन्तु परमेश्वर की सामर्थ पर आधारित है। (3) परमेश्वर ने हमसे वायदा किया कि वह हमारे साथ रहेगा। इस्राएली लोगों के समान हम उसके वाचा के लोग हैं और हम उसके वायदों पर निर्भर हो सकते हैं। वह हमें ताकत देगा जिससे कि हम वे सब कार्य पूरे कर सकें जो वह हमसे करवाना चाहता है (इफ़ि. 3:20; फ़िलि. 4:13)।

परमेश्वर ने मूसा को फ़िर से आज्ञा दी। मूसा इस्राएल के पास अच्छा समाचार लाया: परमेश्वर अपने लोगों को न तो भूला था और न ही उसने उन्हें छोड़ दिया था। वह उन्हें छुड़ाएगा। फ़िर भी, इस्राएली लोगों ने अपनी अत्यधिक निराशा के कारण सुनने से मना कर दिया। इस बात ने स्वयं मूसा को निश्चित रूप से गहरी निराशा में डाल दिया होगा। तुरन्त प्रभाव में परमेश्वर ने मूसा को प्रत्युत्तर दिया, "तुम मूल रूप से वही करो, जिसके लिए मैंने तुम्हें बुलाया" (देखें 6:10, 11)। मूसा ने चाहे कुछ भी सोचा हो परन्तु उसे, दिए गए आदेश के अनुसार चलना था।

जब हम निराशा में होते हैं तब हमें क्या करना चाहिए? हमें हार नहीं माननी चाहिए! हमें दिए गए आदेश, महान आदेश, का पालन करना चाहिए, जिसमें परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए हम वह सब-कुछ करें जो हम कर सकते हैं।

परमेश्वर ने मूसा की आवश्यकता को पूरा किया। मूसा ने, अपनी निराशा में, उस कार्य के लिए स्वयं को अपर्याप्त महसूस किया; ऊपरी तौर पर स्वयं को महत्वहीन सोचने के लिए उसके पुराने विचार फ़िर लौट आए (6:12; देखें 4:10)। फ़िर से परमेश्वर ने मूसा को डाँटा नहीं। इसके स्थान पर सहायता के लिए उसने मूसा की आवश्यकता को पूरा किया और अपनी बुलाहट के बारे में उसे स्मरण दिलाया (6:13)। इसी प्रकार, परमेश्वर हमारी अपर्याप्तताओं में हमारी देख-भाल

करेगा चाहे वे वास्तविक हों अथवा काल्पनिक। हमें मात्र यह सोचना है कि हमारी ओर कौन है। "यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?" (रोमियों 8:31; KJV)।

क्या आप कभी अपनी असफलताओं के कारण अथवा अन्य लोगों ने जिस प्रकार आपके साथ व्यवहार किया उससे कभी निराश हुए? अगर आप निराश हुए तो आप एक अच्छे समूह के साथ हैं - उदाहरण के लिए वह समूह मूसा और एलिय्याह का है। जब आप निराश हो जाते हैं तब आपको क्या करना चाहिए? (1) परमेश्वर की ओर फिरें। उसे अपनी समस्याएँ बताएँ और फ़िर अपनी समस्या उसके हाथों में ही छोड़ दें। (2) जो आज्ञा उसने आपको दी है उसमें निरन्तर आगे बढ़ते जाएँ। "हम भले काम करने में साहस न छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले न हों तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे" (गला. 6:9)।

परमेश्वर के नाम (6:2, 3)

पुराना नियम में परमेश्वर के नामों का बड़ा अर्थ और महत्व है। उन नामों में से तीन नाम इस पाठ्य में दिए गए हैं: (1) "यहोवा परमेश्वर" (*YHWH)*, (2) "परमेश्वर" *('एलोहिम)*, और (3) "सर्वशक्तिमान परमेश्वर" *('एल शदाय)*। अन्य नाम अन्य पाठ्यों में देखें जा सकते हैं। उनमें *'अदोन* (अथवा *'अदोनाय)* हैं, अर्थात "प्रभु," और *'एल 'एल्योन*, जिसका अनुवाद "अत्यन्त ऊँचा परमेश्वर," के रूप में किया गया है।[15]

परमेश्वर के वायदे (6:6-8)

परमेश्वर ने मिस्र के बोझों से, गुलामी से छुटकारे का, उद्धार का, परमेश्वर के लोग बनने का अवसर पाने का और वायदे के देश में प्रवेश करने का वायदा दिया। ये वायदे उसी समान लगते हैं जैसे वर्तमान में मानवजाति के लिए परमेश्वर के वायदे हैं (देखें मत्ती 11:28; यूहन्ना 8:32; 14:3; गला. 3:26, 27)।

लोग सुसमाचार क्यों नहीं सुनेंगे (6:9)

मूसा लोगों के लिए सुसमाचार लाया परन्तु उन्होंने अपनी "निराशा और क्रूर गुलामी" के कारण उसे सुना नहीं। वर्तमान में कुछ लोग सुसमाचार को नहीं सुनेंगे क्योंकि वे भी निराशा और गुलामी में हैं। (प्रचारक अथवा शिक्षक को चाहिए कि वे उन लोगों के अन्य उदाहरण दें जिन्होंने सुसमाचार को नहीं सुना जिनके कारण बाइबल में दिए हुए हैं अथवा जिन कारणों को आसानी से हटा दिया गया। उदाहरण के लिए, देखें प्रेरितों के काम 12:12-16.)

परमेश्वर की सन्तान (6:14-27)

प्राचीन समय में, पुत्र होने के साथ बड़ा महत्व जुड़ा हुआ था। यह झुकाव निर्गमन 6 में मूसा और हारून की वंशावली में साक्ष्य के रूप में देखा जा सकता

है। वर्तमान में अनेक लोग अपनी वंशावलियों की खोज करने में रुचि रखते हैं और यह आशा करते हैं कि वे किसी बड़े वंश से हैं। हमारे पूर्वज कौन थे, इससे महत्वपूर्ण सच्चाई यह है कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं। वह हमारा पिता है और हम उसका परिवार हैं (देखें 1 यूहन्ना 3:1, 2)।

समाप्ति नोट्स

[1]जे. फ़िलिप हैयट, *एक्सोडस,* द न्यु सैन्चुरी बाइबल कमेन्ट्री (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: विम. बी. अड्र्समेन्स पब्लिशिंग कं., 1971), 93. [2]कार्ल बुड्डे, *रिलिजन ऑफ़ इस्राएल टू द एक्साइल,* अमेरिकन लेक्चर्स ऑन द हिस्ट्री ऑफ़ रिलिजन्स, चौथी सीरिज़, 1898-1899 (न्यु योर्क: जी. पी. पटनेम्स सन्स, 1899), 19. [3]रोनाल्ड एफ़. यंगब्लड, *एक्सोडस, एवरीमेन्स बाइबल कमेन्ट्री* (शिकागो: मूडी बाइबल इन्स्टिट्यूट, 1983), 42. [4]उत्पत्ति में भी दो घटनाक्रम को अलग करने के लिए अथवा घटना के दो भागों को अलग करने के लिए कभी-कभी वंशावलियों का प्रयोग किया जाता था। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 36 में एसाव की वंशावली, इसहाक की कहानी (जो कि विशाल रूप से याकूब की कहानी है) और याकूब की कहानी (जो प्राथमिक रूप से याकूब के पुत्रों की कहानी है और विशेष रूप से युसुफ़ की कहानी) के बीच में जोड़ी गई है। [5]जॉन आई. डर्हम, *एक्सोडस,* वर्ड बिब्लिकल कमेन्ट्री, वोल. 3 (वाको, टेक्सस: वर्ड बुक्स, 1987), 83-84. [6]अंबरटो कस्सुटो, *अ कमेन्ट्री ऑन द बुक ऑफ़ एक्सोडस,* ट्रान्स. इस्राएल एब्राहम्स (जरुसलेम: मैगनेस प्रेस, 1997), 87. [7]आर. एलन कोल, *एक्सोडस: एन इन्ट्रोडक्शन एन्ड कमेन्ट्री,* टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेन्ट कमेन्ट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इन्टर-वर्सिटी प्रेस, 1973), 87; विल्बर फ़ील्ड्स, *एक्सप्लोरिंग एक्सोडस,* बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज़ (जोपलिन, मिज़ोरी: कॉलेज प्रेस, 1976), 149-50; पीटर एन्न्स, *एक्सोडस,* द NIV एप्लिकेशन कमेन्ट्री (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन, 2000), 177. [8]ग्लीसन एल. आर्चर, जूनियर, *एनसाइक्लोपिडिया ऑफ़ बाइबल डिफ़िकल्टीज़* (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1982), 111. [9]उपरोक्त., 111-12. [10]वॉल्टर सी. कैसर, जूनियर, "एक्सोडस," इन *द एक्सपोज़िटर्स बाइबल कमेन्ट्री,* वोल. 2, *जेनेसिस-नम्बर्स* (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन, 1990), 344.

[11]एन्न्स, 176. [12]फ़ील्ड्स, 147. लैव्यव्यवस्था 26:41 "खतनारहित हृदयों" (देखें यहेजकेल 44:7, 9) के पद का प्रयोग करते हैं, और यिर्मयाह 6:10 (KJV) खतनारहित काम के बारे में कहता है। मूसा ने अपने बोलने की अयोग्यता का वर्णन 4:10 में अलग-अलग शब्दों के साथ किया। [13]वॉरेन डब्ल्यु. विअर्सबे, *बी डिलिवर्ड* (कोलोराडो स्प्रिंग्स, कोलोराडो: विक्टर, 1998), 25-27. [14]फ़ील्ड्स, 140. [15]*अर्डमेन्स' हैन्डबुक टू द बाइबल,* संपादक डेविड एलेक्सेन्डर एन्ड पेट एलेक्सेन्डर (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: विम. बी. अड्र्समेन्स पब्लिशिंग कं., 1973), 157-58 में जे. एलेक मोट्यर, "द नेम्स ऑफ़ गॉड," इन नामों पर विचार-विमर्श किया गया है। अधिकतर शब्दकोश, परमेश्वर के लिए काम में लिए गए विभिन्न नामों का वर्णन करते हैं।